जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम।
विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम।। ६ ।।

ऐसी हालत में यदि मैं अपने जीव को कुर्बान करने में संकोच करूं तो मेरा धर्म कैसे रहेगा? विरह की आग के सामने जीव हैं ही क्या? ऐसा कहने में मुझे शर्म लगती है।

माया काया जीवसों, भान भून टूक कर।
विरहा तेरा जिन दिसा, मैं वारूं तिन दिस पर।। ७ ।।

माया, शरीर और जीव के टुकड़े कर तथा भूनकर आपकी उस दिशा पर कुर्बान कर दूं, जिस दिशा से मुझे आपका विरह मिला है।

जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड्यो संग।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग।। ८ ।।

जब मेरे अंग से 'हाय धनी' की रट खत्म हो गई और सांस ने भी साथ छोड़ दिया, तब आपने मेरे शरीर का तामस हटाकर (शरीर का कष्ट हटाकर) मुझे स्वीकार किया और सनन्ध वाणी दी।

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ।। ९ ।।

मैंने तो निराशा में ही अपने आप को खत्म कर दिया था। आपने ही मुझे जीवित रखा। आपने अपने काम के लिए (ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने का काम) ही अपनी ताकत देकर फिर से खड़ा कर दिया।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सुहागनी, और व्रध भी राख्यो विरहिन।। १० ।।

हे धनी! आपने अपने काम के लिए मुझे जीवित किया। मेरी चाहना भी पूरी की और मेरी लाज भी रखी।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।। ११ ।।

हे धनी! अब आप आ गये तो मेरे विरह के सब दुःख भूल गए। सब कुछ मिल गया। इन सुखों का वर्णन कैसे करूं? मुझे तो ऐसा लगा जैसे परमधाम में आपके साथ रहते थे वैसे ही यहां हूं।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १५९ ॥

विरह को प्रकास–राग आसावरी

एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए।
पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे।। १ ।।

हे धनी! मुझे इतनी खुशी हो गई है कि मैं कह भी नहीं सकती। यह तो मुझे मेरे पिया श्री राजजी महाराज ने खुश होकर मुझ पर दया की है।

सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब।
अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब।। २ ।।

हे मेरे मोमिनो! मेरी बात को सुनो। मेरी निराश हालत में जब श्री राजजी महाराज ने दर्शन दिया तो अन्दर का परदा (विरहा का परदा) उड़ गया और सब रोशनी हो गई।

Nijanand App

पिया जो पार के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार।
पार दरवाजे तब देखे, जब खोल देखाया पार।। ३ ।।

पिया जो अक्षर के भी परे अक्षरातीत हैं, उन्होंने खुद मेरे अन्दर बैठकर यह सारा ज्ञान मुझे दिया। पार के परमधाम के दर्शन तब हुए जब उन्होंने स्वयं परमधाम के पट (रास्ते) खोलकर दिखाए।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग।
ता दिन थें पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने ही मेरे टूटे-फूटे शरीर को आवेश की अपनी शक्ति देकर उठाया। उसी दिन से दिन प्रतिदिन मेहर बरस रही है। पल-पल वाणी उतर रही है।

हुई पेहेचान पिउसों, तब कह्यो महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम।। ५ ।।

जब अपने पिया से पूरी पहचान हुई तब उन्होंने मेरा नाम महामति रखा। अपने अखण्ड घर को देखकर महामति के नाम से सबमें जाहिर हो गई।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान।
प्रकास पूरन दृढ़ हुआ, उड़ गया उनमान।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी ने घर की सब बातें बताईं। घर के सब निशान जाहिर हो गए। मेरी अटकल उड़ गई और सब कुछ स्पष्ट हो गया।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत।
ए मेहेर कही न जावहीं, सब सुध परी उतपत।। ७ ।।

मैंने अपने आपको पहचाना। अब पता चला कि मैं परब्रह्म की अंगना हूं। इस मेहर का अब मैं कैसे वर्णन करूं? अब शुरू से आखिर तक के सब संशय मिट गए हैं।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप।
कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप।। ८ ।।

बड़ी युक्ति से धनी ने मुझे जगाया तथा अपना अंग देकर मुझे सुख दिया। उन्होंने मुझे गले से लगाया और बड़े प्यार से चिपटा लिया।

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम।। ९ ।।

अब मेरे हृदय रूपी जमीन को अच्छी (खेडी) समझकर जोता तथा पिया ने प्रेम के जल में सींचकर वतन के ज्ञान का बीज (सनन्ध) बोया। उसने विशाल वाणी का रूप धारण कर लिया।

बीज आतम संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर।। १० ।।

इस बीज को मेरे हृदय में आत्मा को जागृत बुद्धि का साथ मिला और अंकुर फूटे। अब इस जबान से इसके प्रकाश का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

नातो ए बात जो गुझ की, सो क्यों होए जाहेर।
सोहागिन प्यारी मुझ को, सो कर ना सकों अंतर।। ११ ।।

अभी तक कुरान के गुझ (गुह्य) रहस्य छिपे हुए थे और जाहिर नहीं हो पा रहे थे, पर मेरे मोमिन मुझे प्यारे हैं, इसलिए मैं उनसे कुछ भी नहीं छिपा सकती।

नेक कहूं या नूर की, कछुक इसारत अब।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी देखसी सब।। १२ ।।

फिर भी इस ज्ञान के प्रकाश की कुछ बातें अब बताती हूं। पीछे तो इस वाणी के जाहिर होने से यह सारी दुनियां को मिल जाएगी।

ए जो विरहा बीतक कही, पिया मिले जिन सूल।
अब फेर कहूं प्रकास थें, जासों पाइए माएने मूल।। १३ ।।

हे मोमिनो! यह मैंने अपने विरह की तथा जैसे श्री प्राणनाथजी मुझे जिस दर्द और कष्ट से मिले हैं, उस हकीकत को कहा है। अब मैं दुबारा अपनी जागृत बुद्धि से बताती हूं जिससे मूल हकीकत के मायने (अर्थ) खुल जाएंगे।

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए।
या विध विरह उदम की, जो कोई किया चाहे।। १४ ।।

यह तो मैंने विरह के लक्षण बताए हैं, पर तुम्हारे अन्दर अभी विरह नहीं है। यदि तुम में से कोई विरह चाहता है तो उसका यह उद्यम (तरीका, उपाय) है।

विरह सुनते पिउ का, आह ना उड़ गई जिन।
ताए वतन सैयां यों कहें, नाहीं न ए विरहिन।। १५ ।।

प्रीतम के बिछुड़ने की खबर सुनते ही जिस विरहिणी ने अपने जीव को नहीं त्यागा, उन्हें रूहें कहेंगी कि वह विरहिणी नहीं है।

जो होवे आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां थें बुध।। १६ ।।

जो स्वयं वियोग से विरहिणी हो जाती है वह किसी के सामने अपना दुःख नहीं बताती, क्योंकि विरह को सुनकर जीव नहीं रहता, तो विरहिणी को बुद्धि कहां से आएगी?

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे।। १७ ।।

यदि एक पतंगा दूसरे पतंगे को सूचना देता है कि तू कहां सोया पड़ा है? मैंने एक दीपक देखा है। चल तुझे भी दिखा दूं।

के तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए।। १८ ।।

दूसरा पतंगा जवाब देता है या तो वह दीपक नहीं है या फिर तू पतंगा नहीं है। पतंगा तो उसी को कहते हैं जो दीपक को देखते ही अपने आप को उसमें झोंक देता है।

Nijanand App

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए।। १९ ।।

एक पतंगा दूसरे पतंगे को यदि सूचना देता है तो उस पर हंसी होती है और सभी कहते हैं कि यह पतंगा ही नहीं है।

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राखे अंग।
आए देवे सुध और को, सो क्यों कहिए पतंग।। २० ।।

दीपक को देखकर यदि वह पतंगा पीछे लौटता है, अपने आप को कुर्बान नहीं करता है और दूसरों को खबर देता है, तो उसे पतंगा नहीं कहा जाता।

जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए।
पर ए वचन तो तब कहे, जब लई पिया उठाए।। २१ ।।

जब मैं विरह में थी तो बोल भी नहीं सकती थी। पर यह वचन तो मैं तब कह रही हूं जब धनी ने स्वयं उठा लिया है।

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम।
विरहिन कबहूं ना करे, यों विरहा अनूकरम।। २२ ।।

यह जो तामस विरह मेरे हृदय में उत्पन्न हुआ है, यह मेरा धर्म नहीं था। विरहिणी इस प्रकार के सिलसिले से कभी विरह नहीं करती।

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।
सोहागिन आतम पिउ की, वतन पार के पार।। २३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में बिना ब्रह्मसृष्टि के और किसी को विरह आता ही नहीं। सुहागिनियां तो श्री प्राणनाथ जी के अंग हैं। उनका घर बेहद के पार से परे है।

अब कहूं नेक अंकूर की, जाए कहिए सोहागिन।
सो विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन।। २४ ।।

अब ब्रह्मसृष्टियों की हकीकत कहती हूं। इनको सुहागिनी कहा जाता है। ऐसी ब्रह्म अंगनाएं जो अपने धनी की सुहागिन हैं, पहले कभी ब्रह्माण्ड में आईं ही नहीं।

सोई सुहागिन आइयां, खसम की विरहिन।
अंतरगत पिया पकरी, ना तो रहे ना तन।। २५ ।।

संसार में जितनी भी ब्रह्मसृष्टियां हैं वह श्री प्राणनाथजी के मिलने में अपने आप को कुर्बान कर देतीं, परन्तु धाम-धनी ने ही उनको संसार में जींवित रखा है।

ए सुध पिया मुझे दई, अन्दर कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, जो गयो तिमर सब नास।। २६ ।।

इसकी सुध मुझे श्री प्राणनाथजी ने दी और इस रहस्य को बताया। तभी अन्धकार का नाश हुआ और यह हकीकत सबको जाहिर हुई।

Nijanand App

प्यारी पिया सोहागनी, सो जुबां कही न जाए।
पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए।। २७ ।।

श्री प्राणनाथजी को ब्रह्मसृष्टियां बहुत प्यारी हैं। इसे जबान से कहा नहीं जा सकता, पर मुझे हुक्म हुआ है, इसलिए इसे कैसे छिपाऊं।

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत।
पर ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए के देत।। २८ ।।

यहां के लोग कई तरह से बन्दगी करते हैं और बहुत लोग विरह भी लेते हैं। इतना करने पर भी जो सुख हमको जगाकर धनी देते हैं वह उनको स्वप्न में भी नहीं मिलता।

छलथें मोहे छुड़ाए के, कछू दियो विरहा संग।
सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनों अंग।। २९ ।।

धाम धनी ने सबसे पहले मुझे माया से छुड़ाया, फिर कुछ विरह दिया। फिर स्वयं आकर विराजमान होकर विरह भी छुड़ा दिया।

अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ।। ३० ।।

मेरे अन्दर जागृत बुद्धि देकर धनी ने कहा कि तू मुझे बहुत प्यारी है। अब यह सुख सबको दो, ऐसा मैं हुक्म करता हूं।

दुख पावत हैं सोहागनी, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर, पर तूं सोहागनियां जगाए।। ३१ ।।

मेरी ब्रह्मसृष्टि को यदि दुःख होता है तो मेरे से सहन नहीं होता, इसलिए सुहागिनी अंगनाओं को तू जगा फिर मैं भी जाहिर हो जाऊंगा।

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन।
प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देखो मन।। ३२ ।।

हे महामति! तू दृढ़ता से मन में विचार कर देख ले कि इस वाणी का फैलाव तुझसे ही होना है— यह ईमान लेकर तू खड़ी हो जा और सुन्दरसाथ को स्पष्ट बताकर पहचान करा।

तोसों न कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार।
सत सब्द के माएने, तूं खोलसी पार द्वार।। ३३ ।।

मेरा तुझसे कोई भेद नहीं है और तू तो मेरी सुहागिनी अंगना है, इसलिए सबके सामने तारतम वाणी के रहस्य को बताकर पार के दरवाजे खोल दे।

जो कदी जाहेर न हुई, सो तुझे होसी सुध।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध।। ३४ ।।

जिसकी आज दिन तक किसी को सुध नहीं थी वह सब जानकारी तुझे दे दी है। अब से अन्त तक जागृत बुद्धि से तुझे सारी जानकारी मिल जाएगी।

Nijanand App

सब ए बातें सूझसी, कहूं अटके नहीं निरधार।
हुकम कारन कारज, पार के पारै पार।। ३५ ।।

अब तुझे पूर्ण ज्ञान हो गया है। अब तू कहीं अटकेगी नहीं। यह श्री राजजी महाराज के हुक्म से कारज कारण हुआ है कि आगे होकर सबको पार के पार का ज्ञान दो।

चौदे तबक एक होएसी, सब हुकम के प्रताप।
ए सोभा होसी तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप।। ३६ ।।

तेरे हुक्म से चौदह लोकों का संसार एक परमात्मा का पूजक बन जाएगा। हे महामति! यह शोभा तुझे मिलने वाली है, इसलिए अपने को मुझसे अलग मत समझ।

जो कोई सब्द संसार में, अर्थ न लिए किन कब।
सो सब खातिर सोहागनी, तूं अर्थ करसी अब।। ३७ ।।

संसार में जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं उनके भी भेद अभी तक नहीं खुले थे। अब मोमिनों के वास्ते तू सब खोलेगी।

तूं देख दिल विचार के, उड़जासी सब असत।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर हुई महामत।। ३८ ।।

तू मन में विचार करके देख, यह संसार उड़ जाएगा। तू सबको सुख देने के लिए ही, हे महामति! सबके बीच जाहिर हुई है।

पेहेले सुख सोहागनी, पीछे सुख संसार।
एक रस सब होएसी, घर घर सुख अपार।। ३९ ।।

सबसे पहले इस वाणी से घर और धनी की पहचान का सुख ब्रह्मसृष्टि को होगा। पीछे सारे संसार को इसका ज्ञान मिलेगा। सब एक रस हो जाएंगे और घर-घर यह अपार सुख सबको होगा।

ए खेल किया जिन खातिर, सो तूं कहियो सोहागिन।
पेहेले खेल दिखाए के, पीछे मूल वतन।। ४० ।।

यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है। इसकी सब मोमिनों (ब्रह्मसृष्टि) को पहचान करा दो। पहले खेल दिखाना है और बाद में अपने घर चलेंगे।

अंतर सैयों से जिन करे, जो सैयां हैं इन घर।
पीछे चौदे तबक में, जाहिर होसी आखिर।। ४१ ।।

हे महामति! तू रूहों से अन्तर मत करना। यह आत्माएं अपने ही घर की हैं। पीछे तो महाप्रलय के समय यह चौदह लोकों में जाहिर होना ही है।

तें कहे वचन मुख थें, होसी तिनथें प्रकास।
असत उड़सी तूल ज्यों, जासी तिमर सब नास।। ४२ ।।

हे महामति! जो वाणी तूने अपने मुख से कही है, उसका बड़ा भारी प्रकाश होगा। इससे सारे झूठ का ब्रह्माण्ड आक के तूल (रूई) के समान उड़ जाएगा और सारा कुफ्र मिट जाएगा।

Nijanand App

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल।। ४३ ।।

हे महामति! जो वाणी तेरे मुख से कही जाए उसके अच्छी तरह से मायने लेना। अगर तेरी आत्मा तुझे साक्षी दे तो अपने किए वायदे पूरे करना।

खसम खड़ा है अंतर, जेती सोहागिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।। ४४ ।।

धनी अभी मेरे अन्दर विराजमान हैं, पर ब्रह्मसृष्टि से अन्तर है। इस बात की हकीकत अपने दिल से पूछ और दृढ़ता के साथ सबको पहचान कराने का काम कर।

आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास।
उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास।। ४५ ।।

स्वयं धनी अभी गुप्त हैं। यह आगे जाहिर हो जाएंगे। सूर्य जब उदय होता है तो कभी छिपता नहीं और सब अज्ञानता दूर हो जाती है, अर्थात् यह तो अखण्ड धाम के धनी का ज्ञान रूपी सूर्य है। कैसे छिपेगा। इससे ही सारी अज्ञानता हटेगी।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ २०४ ॥

राग श्री

सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात।
सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात।। १ ।।

सत और झूठ का दिन और रात के समान अन्तर है। जब सच्चा ज्ञान मिल जाता है तब समझना चाहिए सवेरा हुआ।

जोलों पिउ परदे मिने, विश्व विगूती तब।
सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब।। २ ।।

जब तक प्रीतम की पहचान नहीं थी तभी तक दुनियां उलझी थी। अब अज्ञान मिट गया है, इसलिए दुनियां सब एक रास्ते पर आ जाएगी।

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध।
जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को व्रोध।। ३ ।।

जब तक परब्रह्म की पहचान नहीं थी, तब तक क्रोध और अहंकार था। जैसे ही परब्रह्म जाहिर हुए दुनियां का विरोध मिट गया।

ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए।
छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए।। ४ ।।

यह धनी के ज्ञान का उजाला कैसे ढंपे। यह दुनियां के छल, बल और टेढ़ाई वाले ज्ञान जो माया की तरफ खींच रहे थे, उन सबको उड़ा देगा।

दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल।
पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल।। ५ ।।

यह दुनियां मोह तत्व से ही टेढ़ी है, इसलिए इसकी टेढ़ाई मोह तत्व से ही उड़ा दूंगा। धनी का ज्ञान एक पल में सारे ब्रह्माण्ड को सीधा कर देगा।

Nijanand App